प्राचार्या, डॉ. उज्वला सदावर्ते

हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय

हिमायतनगर

भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे जीवन आणि कार्य ... देणारा अखंड स्त्रोत आहे. या प्रेरणास्त्रोतून मिळणारी प्रेरणा मानवाच्या ... अंगास स्पर्श करणारी सर्वस्पर्शी आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणजे ... अथांग सागर होते. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी 'प्रज्ञा-शिल-करुणा' ... तत्त्वाचा पुरस्कार करून न्याय, स्वातंत्र्य, समता व बंधुता या मानवी मूल्यांच्या प्रस्थापनेसाठी अविरतपणे त्यांनी संघर्ष केला आहे. भारताला स्वतंत्र राष्ट्राचा दर्जा देवून भारत एक महान वैभवशाली राष्ट्र म्हणून पुढे यावा यासाठी त्यांनी दिलेल्या संविधानातील योगदान अतुलनिय, गौरवास्पद आहे. त्यांनी मांडलेले जातीबाबत, धर्माबाबत, राष्ट्रवादाबाबत, शिक्षणाबाबत, शेती, परराष्ट्र धोरणाबाबत मांडलेले विचार मुलगामी आणि दिशादर्शक आहेत. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी अस्पृश्य वंचित घटकांचा उध्दार करणे हे त्यांचे ध्येय होते. या ध्येयपूर्तीसाठी त्यांनी सामाजिक, राजकिय, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक विषयाचे सखोल अध्ययन केले व त्यांची पूर्नमांडणी केली. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या संविधानातील विचारमूल्यांचा आणि जीवन मूल्यांचा गतिमान प्रवाह ग्रंथातील सर्व लेखात दिसून येतो. या ग्रंथात अभ्यासकांनी, संशोधकांनी, विविध विषयावर लिहिलेले आशयपूर्ण लेख या ग्रंथात आहेत. भारतीय स्वातंत्र्याच्या अमृतमहोत्सवी वर्षात ग्रंथ रूपाने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांना ही खरी आदरांजली आहे.

शिवानी प्रकाशन, पुणे

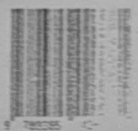

राष्ट्रनिर्माते डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर

संपादक - डॉ. लक्ष्मण भीमराव डोंगरे

शिवानी प्रकाशन, पुणे

राष्ट्रनिर्माते

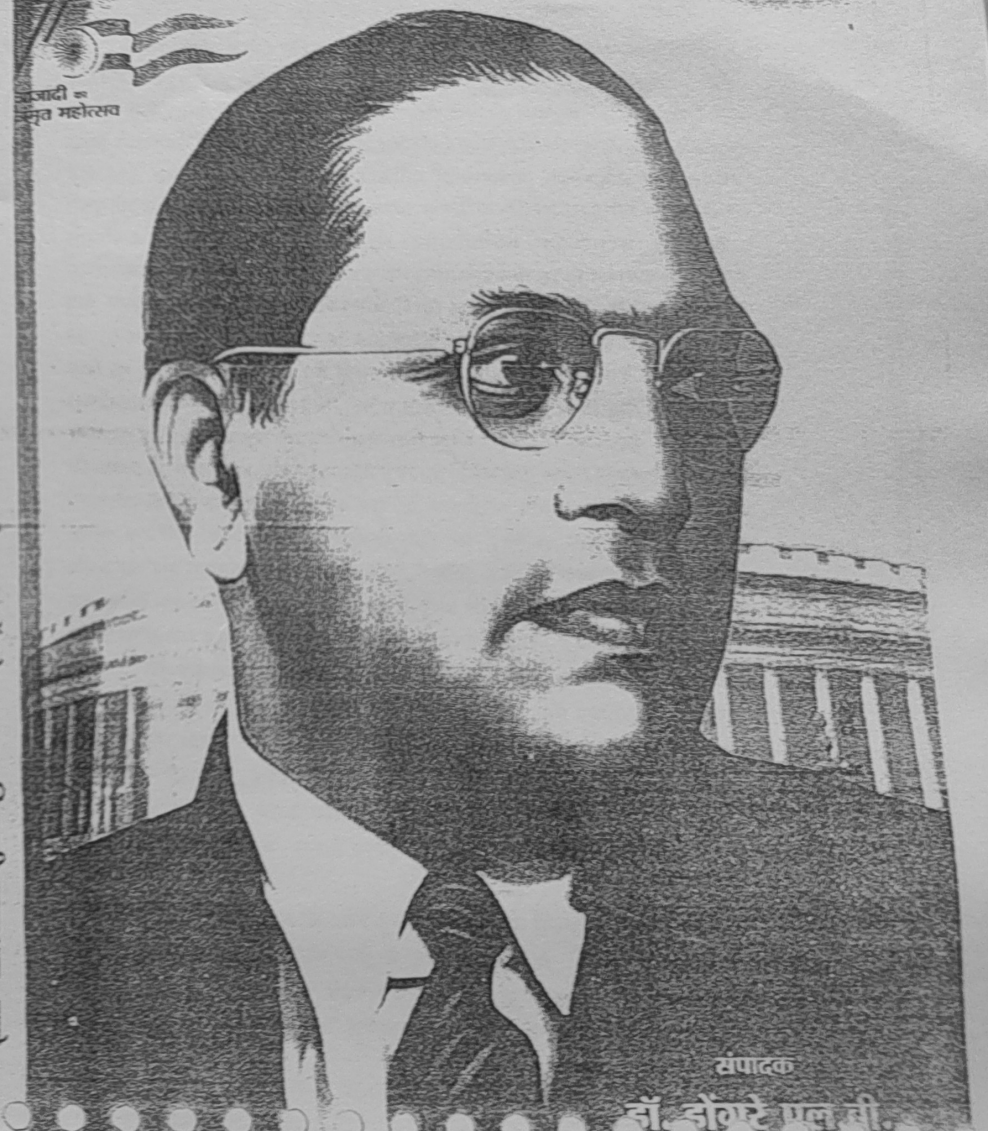

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर

आझादी का अमृत महोत्सव

संपादक

डॉ. डोंगरे एल.बी.

राष्ट्रनिर्माते डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर
संपादक - डॉ. लक्ष्मण भीमराव डोंगरे

सर्व हक्क :
संपादक डॉ. लक्ष्मण भीमराव डोंगरे

प्रथम आवृत्ती :
१ जानेवारी २०२२

प्रकाशक
विजय टेकवार
शिवानी प्रकाशन
माळवाडी हडपसर, पुणे

अक्षर जुळवणी व मुखपृष्ठ
संतोष जाधव
ओम ग्राफिक्स,
संभाजी चौक सिडको नविन नांदेड

मुद्रण स्थळ
आर्टी ऑफसेट, लातूर

किंमत - १९०/-
ISBN – 978-93-85426-68-1

Scanned with ACE Scanner

प्रमुख मार्गदर्शक

प्राचार्य डॉ. उज्वला सदावर्ते

प्राचार्य, हु.जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,

हिमायतनगर जि. नांदेड

सल्लागार समिती

डॉ. हरी वंगरवार, नाशिक

डॉ. एस.पी. उमरीवाड, जळगाव

डॉ. माधव वाघमारे, जळगाव

डॉ. कुणाल वाघ, नाशिक

डॉ.डी.के..कदम, हिमायतनगर

डॉ. वसंत कदम, हिमायतनगर

डॉ. माधव कदम, कंधार

डॉ. शिवाजी भदरगे, हिमायतनगर

डॉ. शेख शहनाज, हिमायतनगर

डॉ. पवार एल.एस., हिमायतनगर

Scanned with ACE Scanner

अनुक्रमणिका

१) डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांचे मुल्यगर्भ शैक्षणिक विचार — 8
डॉ अर्जुन गंगाराम नेरकर

२) डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांचे राष्ट्रवादी आर्थिक विचार — 13
प्रा.डॉ. उत्तम अप्पासाहेब पठारे

३) डॉ बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजीक समतेचे विचार — 17
प्रा. संतोष सुखदेव ठाकरे

४) डॉ बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्त्रीमुक्तीवादी विचार — 26
प्रा.एस.पी. उमरीवाड

५) डॉ बाबासहेब आंबेडकर आणि भारतीय राज्यघटना — 34
प्रा. कौसल्ये एस.जी.

६) भारतीय राज्यघटना आणि डॉ बाबासाहेब आंबेडकर — 43
प्रा. अर्जुन मोरे

७) डॉ बाबासाहेब आंबेडकर यांचे लोकशाही संबंधीचे विचार — 48
प्रा.आनेराव एम.एम.

८) शेतकऱ्यांचे हितकरी - डॉ बाबासाहेब आंबेडकर — 53
डॉ विजयकुमार बाबळे

९) डॉ बाबासाहेब ओडकर भारतीय संवीधानाचे शिल्पकार — 57
डॉ पी.एस.लोखंडे

१०) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार... — 62
प्रा. लक्ष्मण एस. पवार

११) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक विचार - प्रा. डॉ. मनोहर कुंडलिक थोरात — 75

१२) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार — 82
बोंबले राजू बालासाहेब

१३) डॉ. आंबेडकरांचे सामाजिक लोकशाहीसंबंधी विचार — 91
प्रा.डॉ. माधव केरबा वाघमारे

१४) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे परराष्ट्र धोरण एक विश्लेषण — 95
प्रा. डॉ. डोंगरे एल.बी.

१५) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे धर्मविषयक विचार आणि धर्मांतर — 104
डॉ. डी. के. कदम

१६) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या सामाजिक न्याय विषयक दृष्टीकोणाचा विश्लेषणात्मक अभ्यास-डॉ. सुनिल नाना संदानशिव — 113

१७) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची हैदराबाद स्वातंत्र्य लढ्यातील भूमिका आणि योगदान - प्रा.डॉ. वसंत कदम — 120

१८) मला भावलेले डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर — 131
कांवळे विकास यशवंता

१९) आंबेडकर चळवळ आणि दलित स्त्रियांचे मानावाधिकार — 143
छाया भिमराव उमरे

२०) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शैक्षणिक विचार — 150
महेश गजेंद्र रंदिल

२१) भारतीय शिक्षा में आंबेडकर जी का योगदान — 156
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद

२२) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का लोकतांत्रिक चिंतन — 166
डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे

२३) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों मे राष्ट्रहित — 170
प्रा. कैलास काशिनाथ बच्छाव

24) Why Caste Matters in India? — 175
Mr. Swapnil Alhat

25) The Role of Hindu Code Bill in the Empowerment of Women in India - **Dr. Ingole Ramesh Jankiram** — 180

26) Dr. Babasaheb Ambedkar's Idea of Democratic Society — 189
Mr. Keda N. Wagh

27) IMPORTANCE OF THE PERSPECTIVE OF DR. BABASAHEB AMBEDKAR TOWARDS BRAHMINS AND BRAHMANISM. IN TODAYS CONTEXT: A NEED OF HOUR FOR THE CONSERVATION OF SOCIAL ENVIRONMENT IN INDIA. — 192
Dr. Krishnanand Patil

28) Dr.BabasahebAmbedkar's Views on Problem of Small Land Holdings in India and Remedies - **H. P. Wangarwar,** — 205

29) Reflection of caste-system in Indian society in Dr. Babasaheb Ambedkar's works - **Mr. Mupade Parmeshwar Tukaram** — 212

30) "Dr. Babasaheb Ambedkar's Contribution to Indian Economy" — 219
Dr. Ingle Sangapal Prakash

Scanned with ACE Scanner

22) "डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर का लोकतांत्रिक चिंतन"

डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे
सहायक प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख,
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,
हिमायत नगर जिला नांदेड़ पिन- 431802

प्रस्तावना:

डॉ बाबासाहेब आंबेडकर जी का नाम पूरे विश्व भर में ज्ञानसूर्य, विश्वरत्न के रूप में प्रख्यात है। जब तक सूर्य का अस्तित्व है तब तक डॉ. अंबेडकर के विचार नहीं मिट सकते देश के आजादी के पहले देश के अंतर्गत जो छुआछूत फैली हुई थी। इस छुआछूत के बंधनों से बहुजन समाज को मुक्त कर एक सामाजिक क्रांति का बहुत बड़ा योगदान डॉ बाबासाहेब आंबेडकर ने दिया। और बौद्ध धर्म का अनुसरण करते हुए सामाजिक सुधार हेतु प्रजातांत्रिक भारतीय संविधान का निर्माण कर आधुनिक भारत का ध्वज फहराया। यह डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर की सबसे बड़ी राष्ट्रभक्ति है।डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने समतामूलक समाज की स्थापना करने के लिए हर एक भारतीय नागरिक को निर्भयता से जीने के लिए शिक्षा, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुता और समानता का न्यायिक अधिकार संविधान के माध्यम से प्राप्त करके दिया। इसलिए उन्होंने राजनीतिक ढांचे को बनाते समय उसे संसदीय प्रणाली से जोड़ देना चाहा। भारतीय संस्थानों की भूमिका की रचनात्मकता को उन्होंने अपनी कलम से संविधान में लोकतांत्रिक मूल्यों से जोड़ दिया। भारत को विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक प्रणाली प्रदान की। इसलिए भारत का भविष्य लोकतांत्रिक मूल्य पर ही निर्भर है। यूं कहिए कि भारतीय प्रजातंत्र की विशेषता लोगों को बताना आज के मायने में बहुत आवश्यक है।आधुनिक भारत के निर्माता संविधान कार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की देशके प्रति समर्पित भावना बहुत ही महत्वपूर्ण है।इसदृष्टिसेभारतीय संविधान के उद्देश्य पत्रिका में वे लिखते हैं-

"हम भारत के लोग भारत को एक महत्वपूर्ण प्रभुत्व संपन्न लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक, न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म (आस्था) और उपासना की स्वतंत्रता की प्रतिष्ठा अवसर की समानता प्राप्त कराने के लिए तथा उनमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित कराने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में संविधान को पारित करते हैं।"डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचार संकुचित नहीं थे। वह देश के हित को महत्वपूर्ण मानते थे। डॉ बाबासाहेब आंबेडकर ने भारतीय संविधान केढांचेके मूल उद्देश्यपत्रिकामेंनिहितहै।उद्देशिका का अभ्यास करने से ज्ञात होता है कि, डॉ. बाबासाहब आंबेडकर एक सच्चा देश

प्रेमी, प्रखर वक्ता और आदर्श नेता के रूप में सामने आते हैं।वेहमारे देश का भूषण और बहुत बड़ागर्वहैं। भारत में सदियों से शोषित, पीड़ित, दलित, सर्वहारा, उपेक्षित वर्ग को एक सूत्र में बांधकर वर्ण वादी व्यवस्था के दलदल से बाहर निकालनेका काम डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी किया है।उनको संविधान के माध्यम से विशेष स्थान देकर उनके जीवन मान को ऊपर उठाने का प्रयास भी किया। संविधान में उन्होंने देश हित को सामने रखते हुए संहिता बनाई और धर्म, वंश, जाति के आधार पर होने वाले भेदभाव को मिटा डाला। सर्वहारा वर्ग जो व्यवस्था से कोसों दूर था। ऐसे लोगों को शिक्षा देकर नौकरी तथा हर क्षेत्र में समानता का दर्जा देकेउन्हेंप्रोत्साहितकिया। अस्पृश्यता को कलंक समझकर उसे ढोने का काम भी उन्होंने किया। संविधान में अल्पसंख्यक की बात करते हुए उनकी रक्षा कीयहहमारेदेशके प्रति बहुत बड़ा योगदान है।

लोकतांत्रिक मूल्यों को चलाने के लिए जो सुविधा चाहिए वह सुविधा सिद्धांत और व्यवहारिक रूप में डॉ बाबासाहेब आंबेडकर ने भारतीय संविधान में लिखकर देश को समर्पित की। उनके अनुसार लोकतंत्र का उद्देश्य केवल समाज या किसी भी एक समूह या समुदाय का हित नहीं है। वह सर्वसमावेशक हित को सामने रखते हुए संविधान का निर्माण किया। मनुष्य की विभिन्न समस्याएं, भावनाएं, विचार और कार्य प्रणाली संविधान में पाई जाती है। अस्तु, सामाजिक संगठन में हर एक नागरिक को समान हक और अधिकार मिलना चाहिए। जनतंत्र अल्पसंख्यकों के शोषण का भी पुरजोर विरोध करता है। इसी शोषण और दमन का प्रयोग लोकतंत्र और मानवतावाद का विरोधी है। इस पर अंकुश नहीं रखा जाए तो लोकतंत्र में अत्याचार बढ़ जाएगा।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के अनुसार लोकतंत्र प्रकृति की उपज नहीं है, वह सामाजिक जीवन की आदत है। मनुष्य द्वारा अपने समृद्धि के लिए उसे प्राप्त किया जा सकता है इस देश में मनुष्य का तानाशाही शासन से भला नहीं होगा। इससे जनता की समस्याओं का समाधान नहीं हो पाएगा। जोर, जुलुम बढ़ेगा। यह उन्हें पता था। इसलिए उनका कहना है कि, भारत का लोकतंत्र जनता की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में सफल हो। भारत में लोकतंत्र की सफलता जनता की संतुष्टि पर आधारित होनी चाहिए। हमारे देश में संसदीय लोकतंत्र सफल होने के लिए मनुष्य को बदलना आवश्यक है। उसकी सफलता के लिए देश में बदलाव दंगा फसाद आदि जैसे खतरनाक घटनाएं घटित हो जाएगी। ऐसा उनका मानना था। वे कहते हैं कि संसदीय लोकतंत्र में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो इस देश में ज्यादा से कुछ हो सके। उन्होंने केवल लोकतंत्र के दोषों को ही नहीं बल्कि सकारात्मक बातों पर ही अधिक बल दिया है। वे चाहते थे कि लोकतंत्र का उद्देश्य केवल लोगों का कल्याण करना ही है। लोकतंत्र में शासन व्यवस्था कुछ गिने-चुने लोगों के हाथों में निरंतर नहीं होनी चाहिए इसका फैसला जनता पर आधारित होनाचाहिए यह लोकतंत्र की सफलता है। और इस दृष्टि से आज के शासन में यह दोष पाया जाता।

Scanned with ACE Scanner

डॉ. बाबासाहब अंबेडकर के विचारों के अनुसार लोकतंत्र देश के सर्वांगीण विकास का साधन होना चाहिए लोकतंत्र में मानवीयसमानता होनी चाहिए लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में लोग खुद अपना विकास अपने हाथों से कर सके। लोकतंत्र लोगों के विश्वास पर चल सके। कठिन परिश्रम कर सकें। अनुशासन कार्य हो तो लोकतंत्र को कार्यकुशलता द्वारा बनाए रखा जा सकता है, अन्यथा नहीं। लोकतंत्र का विचार मानवीय समानता पर निर्भर होता है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली पर विश्वास करते हुए कहा था कि, देश में संविधान का काम तब तक नहीं किया जा सकता है कि, जब तक जनता की स्वीकृति उसे नहीं मिल पाए। ऐसा उनका मानना था। भारतीय नागरिकों के मूलभूत अधिकारों को भारतीय संविधान में समाकर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने सबसे बड़ी मौलिकता संविधान के माध्यम से हासिल की। भारतीय नागरिकों के न्याय समता स्वतंत्रता के संदर्भ में उन्होंने कहा था वह सब संविधानमें किया। उसके साथ उन्होंने यह भी देखा था कि, सामान्य लोग ठीक तरह से इस प्रणाली में अपना जीवन यापन कर सकेउसपर उन्होंने अधिक गौर किरकेसंविधानका निर्माण किया।

लोकतंत्र की सफलता के लिए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने अपने स्वतंत्र विचार रखते हुए कहा कि, सभी वर्गों के लोगों को कानून और न्याय के लिए वह समान स्थिति प्रदान की जाएगी। जो इस देश के सवर्ण और अवर्ण के लिए समान हो। इस देश के साथ ही वे मानवीय अधिकारों का समर्थन करते किया। जिस कारण भारतीय नागरिकों को स्वतंत्रता, समानता,संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा प्राप्ति का अधिकारों के माध्यम से इस देश के तमाम लोगों के लिए अवसर प्रदान किए।

सारांश:

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने संविधान के माध्यम से अनेक प्रावधान करते हुए इस देश के सबसे शोषित, पीड़ित, दलित, पददलित और औरतों के लिए मुक्ति के द्वार खोले। शिक्षा, रोजगार, छुट्टियों के लिए अवकाश आदि अधिकारों को संविधान में उन्होंने शामिल किया। स्त्री-पुरुषों को सभी के साथ समानता का भाव पैदा करने का भी अधिकार दियासमानकार्य के लिए समान वेतन देने का भी प्रावधान संविधान के माध्यम से किया। इसलिए डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर जी ने कल्याणकारी राज्य की कल्पना संविधान के माध्यम से अभिव्यक्त किा लोकतंत्र के समर्थन में डॉ. अंबेडकर ने अनेक बातों को प्रस्तुत किया। समतामूलक समाज की स्थापना और देश की स्वतंत्रता आदि विषय डॉ बाबासाहेब आंबेडकर को अधिक महत्वपूर्ण लगते थे। स्त्री पुरुष को समान अधिकार देते हुए दीन दीन दुखी पीड़ितों को समाज के मुख्य प्रभाव में लाकर जीने का हक और अधिकार दिया। शिक्षा प्राप्ति का भी समान अधिकार दिया। धन-दौलत अधिकार दिया। हर जगह स्त्री पुरुष समान रूप से कार्य कर सकते हैं और अपना देश के प्रति योगदान दे सकते हैं। इसीलिए उन्होंने संविधान में लोकतांत्रिक प्रणाली का निर्माण किया। हमारी

लोकतांत्रिक प्रणाली दुनिया की सबसे सफल और बड़ी शासन प्रणाली मानी जाती है। इसका पूरा श्रेय डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के जीवन और कार्य को दिया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ:

1) डॉ. बी. आर. अंबेडकर- 1979, "डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर राइटिंग्स एंड स्पीचेस वॉल्यूम-1", एजुकेशन डिपार्टमेंट, गवर्नमेंट ऑफ महाराष्ट्र मुंबई।
2) डॉ. बी. आर. अंबेडकर- 1982, "डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर राइटिंग्स एंडस्पीचेस वॉल्यूम-2", एजुकेशन डिपार्टमेंट, गवर्नमेंट ऑफ महाराष्ट्र मुंबई।
3) डॉ. बी. आर. अंबेडकर- 1987, "डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर राइटिंग्स एंडस्पीच वॉल्यूम-3",एजुकेशन डिपार्टमेंट, गवर्नमेंट ऑफ महाराष्ट्र मुंबई।
4) डॉ. बी. आर. अंबेडकर- 1995, "डॉ.बाबासाहेब अंबेडकर राइटिंग्स एंडस्पीचेस वॉल्यूम-14 (खण्ड 1 और 2)", एजुकेशनडिपार्टमेंट,गवर्नमेंटऑफमहाराष्ट्रमुंबई।
5) नगर, पुरुषोत्तम- "आधुनिक भारतीय सामाजिक व राजनीतिक चिंतन" राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर 2000।

Scanned with ACE Scanner